Impact Factor : 7.834

गीना देवी शोध संस्थान

द्वारा पटियाला, श्रीगंगानगर व नेपाल से प्रसारित

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय मासिक

ISSN : 2321-8037

Aug. 2025

Volume 13, Issue 8

Gina Shodh SANGAM

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

New Dimension in Research from the Indian Perspective

Special Issue Editor
Dr. Neeraj Ruwali,
Mohit Kumar Sharma
Jyotsana Bhatt

Editor
Dr. Rekha Soni
Chief-Editor
Dr. Naresh Sihag

संस्थापक सम्पादिका :
स्मृति शेष
डॉ. विश्वकीर्ति

संगम SANGAM

बहुभाषिक बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

www.ginajournal.com

संस्थापक संरक्षक :
स्मृति शेष
श्री हरविन्द्र कमल चौधरी

वर्ष : 13 | अंक : 8 | अगस्त : 2025 (विशेषांक) | आईएसएसएन : 2321-8037

सम्पादक :
डॉ. रेखा सोनी
शिक्षा विभाग, टांटिया वि.वि.,
श्रीगंगानगर – 335001 (राज.)

प्रधान सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
सचिव, गीना देवी शोध संस्थान,
भिवानी (हरियाणा)

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. नीरज रूवाली,
मोहित कुमार शर्मा,
ज्योत्सना भट्ट

मार्गदर्शन :
डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. लक्ष्मी जोशी
त्रिभुवन वि.वि. काठमाण्डू।

डॉ. सृष्टि चौधरी
लेक्चरर, इलेक्ट्रानिक्स एंड कम्युनिकेशन,
सरकारी पॉलिटेक्निक कॉलेज फॉर गर्ल्स, पटियाला, पंजाब।

श्री श्रेष्ठ चौधरी,
सीनियर मैनेजर,
स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, साहिबजादा अजित सिंह नगर, मोहाली, पंजाब।

कानूनी सलाहकार :
डॉ. रामफल दलाल एडवोकेट,
श्रीमती रूपिन्द्र कौर, एडवोकेट

सलाहाकार समिति (Advisory Committee)

डॉ. सुलक्षणा अहलावत
अंग्रेजी प्रवक्ता, शिक्षा विभाग
नूंह (हरियाणा)

डॉ. अरूणा अंचल
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
रोहतक (हरियाणा)

डॉ. सुशीला
चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी।

डॉ. अल्पना शर्मा
आईएएसई विश्वविद्यालय सरदारशहर

डॉ. विजय महादेव गाडे
बाबा साहेब चितले महाविद्यालय
भिलवडी (महाराष्ट्र)

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कॉलेज
धारवाड़ (कर्नाटक)

डॉ. रीना कुमारी
दशमेश गर्ल्स कॉलेज,
अल्ला बक्श, मुकेरिया, पंजाब।

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

श्री हेमराज न्यौपाने
नेपाल।

डॉ. ममता तनेजा
अबोहर, पंजाब।

डॉ. प्रियंका खंडेलवाल
बराण, राजस्थान।

डॉ. संदीप
ओम विश्वविद्यालय, हिसार।

प्रो. मधुबाला
राजकीय महिला महाविद्यालय, हिसार।

डॉ. पीयूष कुमार द्विवेदी
जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तरप्रदेश

डॉ. हवासिंह ढाका
राजकीय महाविद्यालय, हिन्दुमलकोट,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

डॉ. मानसिंह दहिया
संस्कृत प्रवक्ता, शिक्षा विभाग हरियाणा

डॉ. राजेश शर्मा
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

डॉ. मोहिनी दहिया
माती जीतोजी कन्या महाविद्यालय,
सूरतगढ़ (राजस्थान)

डॉ. मुद्दस्सिर अहमद भट्ट
हिन्दी विभाग,
कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर, कश्मीर

डॉ. सीहेच वी. महालक्ष्मी
सीहेच एसडीएसटी थेरेसा महिला महाविद्यालय, एलुरू, आंध्र प्रदेश

डॉ. मोरवे रोशन के.
यूनाईटिड किंगडम।

डॉ. अनुपमा, पूर्व प्रोफेसर,
अंकारा विश्वविधालय, अंकारा, टर्की

डॉ. आर.के विश्वास
अध्यक्ष होम्योपैथिक, टांटिया, वि.वि.

प्रकाशक, स्वामी एवं मुद्रक **डॉ. नरेश सिहाग,** एडवोकेट ने **मनभावन प्रिन्टर्ज,** पुराना बस स्टैण्ड रोड़, नया बाजार, भिवानी से छपवाकर 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा) से जारी किया।

संगम SANGAM

बहुभाषिक बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

(Journal of Literature, Arts, Science, Commerece, Culture, Humanities and Social Sciences)

सचिव :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,

भिवानी–127021 (हरियाणा)

Email : grngobwn@gmail.com

मो. 09466532152

संगम मासिक पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं/लेखों की मौलिकता का दायित्त्व स्वयं रचनाकारों/लेखकों का है। उससे सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्यायक्षेत्र केवल भिवानी (हरियाणा) होगा।
सम्पादन और प्रबंधन के सभी पद पूर्ण रूप से अवैतनिक हैं।

Published by :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board,

Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA

Email : grsbohal@gmail.com

Facebook.com/bohalshodhmanjusha

Website : www.bohalsm.blogspot.com

WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1300/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

अनुक्रमाणिका

सं.	लेख का नाम	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीय	मोहित कुमार शर्मा	07–08
2.	भारतीय ज्ञान परंपरा में बौद्ध दर्शन का महत्त्व एवं योगदान	अनूप कुमार जायसवाल	09–14
3.	कंबुज में बौद्ध धर्म : ऐतिहासिक निरंतरता और सांस्कृतिक रूपांतरण का एक अध्ययन	आनन्द विश्वकर्मा	15–18
4.	डॉ. विद्या विंदु सिंह की कहानियों में मानवीय गुण	जे. अशोक कुमार जैन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	19–22
5.	भारतीय भाषाओं में इतिहास-लेखन की परंपराएं और चुनौतियाँ	अशोक कुमार	23–26
6.	भारतीय राष्ट्रवाद के विविध आयाम	विवेक कुमार, प्रो. ज्योति साह	27–33
7.	समकालीन भारतीय सिनेमा में स्त्री	सुंदरम साहू, डॉ. ऋचा सुकुमार	34–37
8.	धूणी तपे तीर में वर्णित भील और मीणा जाति का संघर्ष	सुजाता, डॉ. पूनम चालिया	38–41
9.	क्रांतिकारी गतिविधियां और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन	शुभम कुमार	42–50
10.	मध्य प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था की भूमिका	डॉ. राकेश बघेल	51–57
11.	आयुर्वेद चिकित्सा : वर्तमान ग्रामीण समाज की आवश्यकता	नरेन्द्र कुमार त्रिपाठी	58–62
12.	भारतीय शिक्षा प्रणाली की विकास यात्रा का एक नवीन युग : NEP 2020	डॉ. रमेश राम	63–69
13.	मीरा के काव्य में विरहानुभूति व स्त्री स्वाधीनता	जगदीश	70–73
14.	हिंदी राष्ट्रवादी कवियों के काव्य में साहित्यिक सामाजिक व सांस्कृतिक विरासत के सन्दर्भ में	काजल पौनयाँ, डॉ. अंजू बंसल	74–80
15.	1857 की क्रांति के स्वरूप पर औपनिवेशिक इतिहास लेखन का समीक्षात्मक अध्ययन	कोमल सोनी	81–85
16.	जहाँगीर कालीन चित्रकला	लक्ष्मी कुमारी	86–89
17.	कुमाऊँ (कपकोट) की बदियाकोट भगवती मंदिर का धार्मिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन	माला	90–96

18.	भारतीय शिक्षा प्रणाली का युगांतकारी परिवर्तन : NEP 2020	डॉ. कंचन आर्या	96–104
19.	नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : संभावनाएं एवं चुनौतियां	डॉ. रूपा आर्या	105–110
20.	एकदानैमिषाराये में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन	डॉ. प्रदीप कटारा	111–115
21.	राजा भोज परमार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	आशा शर्मा	116–121
22.	पूर्वी उत्तर प्रदेश की शुंग–कुषाण कालीन मृद्भाण्ड परम्पराएं	जकिया खान	122–125
23.	नव–उदारवादी अर्थव्यवस्था का भारतीय कृषि पर प्रभाव	मृदुल मलय	126–130
24.	ख्याल परम्परा और अलीबख्श	राजेश कुमार	131–133
25.	उत्तर प्रदेश में बाल श्रम उन्मूलन संबंधी सरकार की नीतियां	निधि लोधी	134–138
26.	चाय बागानों में महिला श्रमबल भागीदारी : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (कौसानी चाय बागान के विशेष संदर्भ में)	डॉ. सावित्री	139–146
27.	सुमित्रानन्दन पंत जी के काव्य में श्रमिक–मजदूर वर्गो का संघर्ष	राजकुमार	147–151
28.	चन्द्रावती (सिरोही) : मध्यकालीन भारत का एक सांस्कृतिक तीर्थ	सोहन लाल	152–158
29.	पश्चिमी राजस्थान में स्वदेशी व्यापारियों की संरचना एवं भूमिका	विनोद कुमार शर्मा	159–163
30.	ऐतिहासिक हस्तिनापुर, पर्यटन एवं पर्यटक : एक अध्ययन	प्रो. देवेंद्र कुमार गुप्ता, दीपक कुमार	164–170
31.	चंदेल कालीन स्थापत्य कला एवं संस्कृति का विशेष अंकन	कु. आदिती जायसवाल	171–175
32.	सामुदायिक विकास और समाज कल्याण कार्यों में टाटा स्टील का योगदान	डॉ. रीना कुमारी	176–184
33.	डिजिटल युग में ऑटिज्म प्रभावित बच्चों में योग अभ्यास की सामाजिक भूमिका	संदीप सैनी	185–192
34.	प्राचीन भारतीय समाज में दंड व्यवस्था का विकास	रविकांत वर्मा	194–198
35.	भारतीय विचार के दार्शनिक, आध्यात्मिक और नैतिक आयाम : एक समीक्षा	यदुनंदन	199–203
36.	वृषभ का प्रतीकात्मक विकास : सिंधु से गुप्त काल तक मुद्राओं में एक अनुशीलन	विशाखा पाण्डेय	204–207

37.	छत्तीसगढ़ के महान संत बाबा गुरू घासीदास जी का समाज दर्शन	अविनाश बनर्जी	208–214
38.	समकालीन पत्रकारिता की दृष्टि में 1857 ई. का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम	विशाल, प्रो. आशा यादव	215–222
39.	साठोत्तरी हिंदी गजल में सामाजिक यथार्थबोध	अमन कुमार	223–227
40.	हिंदी उपन्यासों में वृद्ध विमर्श – सूरज सिंह नेगी के संदर्भ में	बी. कमला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	228–233
41.	मीडिया का समाज पर प्रभाव	डॉ. सविता	234–239
42.	हर्षवर्धन कालीन समाज एवं संस्कृति : हर्षचरित के विशेष संदर्भ में	हर्ष वार्ष्णेय	240–244
43.	बेरीनाग गुफा चित्रकारी 'गंगावली क्षेत्र' की प्रागैतिहासिक खोज	अमन कुमार, बबीता बोहरा	245–248
44.	भारतीय राजनीति में जयप्रकाश नारायण का चिंतन के विशेष संदर्भ में	शिव राम, डॉ. नीता भारती	249–256
45.	पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद एंव विकसित भारत एक अन्तर्सम्बन्ध का विश्लेषण	प्रो. मधुरेन्द्र कुमार, कमलेश्वर	257–264

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
Vol. 13, Issue 8
पृष्ठ : 228–233

हिंदी उपन्यासों में वृद्ध विमर्श – सूरज सिंह नेगी के संदर्भ में

बी. कमला, पी.एच.डी शोधार्थी
डॉ. अनुराधा पाकलपाटि, असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एण्ड अडवांस स्टडीज़, (VISTAS), पल्लावरम, चेन्नई।

सार :–

भारतीय संस्कृति एक सामूहिक संस्कृति है। साहित्य में स्त्री, पुरुष, बाल–बच्चे, वृद्ध, तृतीय लिंग आदि पर केंद्रित साहित्य लिखा गया है। 'वसुधैव कुडुंबकम्' परिपाटी भारत की पहचान रही है। कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है। आधुनिक साहित्य में गद्य, पद्य, कविता, कहानी, उपन्यास, जीवनी, एकांकी आदि विधाओं की रचनाएँ शामिल है। रामायण से जान सकते हैं कि वृद्धों को महत्व दिया गया है। वैसे ही आधुनिक काल के उपन्यासकार 'सूरज सिंह नेगी' के उपन्यासों द्वारा वृद्धों को महत्व देकर माता–पिता द्वारा संतान के लिए समर्पित जीवन, अभिभावकों के प्रति उदासीनता के भाव का नष्ट, माता–पिता का स्नेह अपने संतान के प्रति–अभाव आदि मुद्दों पर चर्चा करने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द :– वृद्ध, विमर्श, समाज, उदासीनता, परिवार, साहित्य, संतान का दायित्व, मानसिक परिस्थिति, समर्पण आदि।

प्रस्तावना :–

भगवान की सृष्टि में मानव का रूप धारण कर हम अपनी लंबी संघर्षमय जीवन यात्रा पर है। इस जीवन यात्रा में हमारे कर्म, उत्तरदायी, जवाबदेही, कर्तव्य आदि को निभाते हुए अपना जीवन व्यतीत करते हैं। समाज में जो परिवर्तन होती है वह परिवर्तन हमारे जीवन में भी प्रभाव पड़ता है। आधुनिक उपन्यास में वर्तमान परिस्थितियों और जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण दिखाने वाले उपन्यास होते हैं जैसे निर्मला, गबन, कर्मभूमि, प्रतिज्ञा आदि प्रेमचंद के उपन्यासों से देखने को मिलती है। आधुनिक काल को ही विमर्शों का काल कहा जाता है। इस काल में किसान–विमर्श, पर्यावरण विमर्श, आदिवासी–विमर्श, नारी–विमर्श, दलित–विमर्श, वृद्ध–विमर्श आदि उल्लेखनीय है।

विमर्श का अर्थ :–

- अमर हिंदी शब्दकोश बृहत् के अनुसार विमर्श का अर्थ – 'परीक्षण, समीक्षा, विचार, विवेचन, परामर्श, तर्क आदि।'[1]

- वर्धा हिंदी शब्दकोश के अनुसार विमर्श का अर्थ है– 'पर्यालोपन, तथ्यानुसंधान, गुण–दोष आदि की आलोचना करना, तर्क करना।'[2]

विमर्श की परिभाषा :–

विमर्श की परिभाषा कई भाषाएँ में जैसे संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी शब्दकोशों में कई विद्वानों ने अपने–अपने मत व्यक्त किए हैं। जब कोई व्यक्ति किसी विषय को लेकर अकेले में गहन या चिन्तन, मनन करके किसी समूह में जाकर उस विषय पर अन्य व्यक्तियों से तर्क–वितर्क या चर्चा करता है उसे विमर्श कहा जाता है।

- हिन्दी शब्दकोश बृहत के अनुसार, 'विमर्श की परिभाषा षविमर्श यानी समालोचना, परामर्श, परीक्षा, किसी बात पर अच्छी तरह विचार करना।'[3]
- Walter and scott :- "An informal group discussion to solve problems or understand values."[4]

मानव जीवन के विकास में विविध अवस्था :–

मानव जीवन के विकास को अनेक अवस्थाओं में विभाजित किया गया है।

- मां के गर्भ से लेकर जन्म तक की अवस्था – गर्भावस्था।
- शून्य से पाँच तक (0–5) की अवस्था – शैशवास्था।
- पाँच से बारह तक (5–12) की अवस्था – बाल्यावस्था।
- बारह से अठारह तक (12–18) की अवस्था – किशोरावस्था।
- अठारह से पच्चीस तक (18–25) की अवस्था – युवावस्था।
- पच्चीस से साठ तक (25–60) की अवस्था – प्रौढ़ावस्था।
- साठ से पचहत्तर तक (60–75) की अवस्था – युवा वृद्ध।
- पचहत्तर से मृत्यु तक (75–मृत्यु) वृद्धावस्था कहा जाता है।

मनुष्य के तन–मन की आवश्यकताओं की पूर्ति समाज के सहयोग पर आधारित है। हमारे अथर्ववेद में यह उल्लेखनीय है कि 'जीवेत् शरदः शतम्।' अर्थात् सौ वर्ष तक जीने, सुनने, देखने, सोचने–विचारने तथा नए–नए पद प्राप्त करते–करते अपना जीवन सौ वर्ष तक चलने की आशा इस श्लोक पर उक्त है। सौ वर्ष का जीवन एक समान नहीं रहता बल्कि सामाजिक परिवर्तनों के कारण मनुष्य का तन–मन बुद्धि और सोच बदलता रहता हैं।

वृद्ध का अर्थ :–

मानव विकास में अंतिम अवस्था वृद्धावस्था है। 'वृद्ध' शब्द से ही वृद्धावस्था शब्द का निर्माण हुआ है।

- मानक हिन्दी शब्दकोश में वृद्ध शब्द का अर्थ 'बूढ़ा हुआ, अच्छी या पूरी तरह से बढ़ा हुआ, गुण, विद्या आदि के विचार से औरों की अपेक्षा बहुत चतुर, विद्वान या बहुत श्रेष्ठ।'[5]

वृद्ध की परिभाषा :– कुछ विद्वानों के अनुसार वृद्ध की परिभाषा निम्नलिखित है।

- डॉ. पदुमलाल पुन्नालाला बख्शी के कथन से 'वृद्ध एक ऐसी अवस्था है जिसमें लोगों के सभी भाव रस के रूप में परिणत होकर आनंदमय हो जाते है।'[6]
- The Oxford Dictionary of Sports Science and Medicine, " Old age is the final stage of life, and

is associated with declining mental and physical faculties."[7]

युवा कथाकार 'सूरज सिंह नेगी' का व्यक्तित्व और कृतित्व :-

अद्यतन हिन्दी साहित्य में युवा कथाकार सूरज सिंह नेगी का जन्म अल्मोड़ा जिले में 17 दिसंबर 1967 में हुआ। उनके पिता स्व. इंद्रसिंह नेगी तथा माता लक्ष्मीदेवी जी छत्रछाया में रहते हुए हाई स्कूल की शिक्षा पैतृक गाँव में लेने के बाद 'कॉमर्स कॉलेज' जयपुर से प्रथम श्रेणी में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। तत्पश्चात राजस्थान यूनिवर्सिटी, जयपुर से एम.कॉम तथा एम.फिल की उपाधि प्राप्त की। "A Critical Appraisal of Industrial Development of Rajasthan" शोध विषय पर पी.एच.डी की उपाधि ग्रहण की। डॉक्टर नेगी जी संप्रति सवाई माधोपुर में अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट के पद को शोभायमान कर रहे हैं। डॉ. सूरज सिंह नेगी के अब तक दो कहानी संग्रह 'पापा फिर कब आओगे' तथा 'सांझ के दीप', चार उपन्यास –'रिश्तों की आंच', 'वसीयत', 'नियति चक्र', तथा 'यह कैसा रिश्ता' प्रकाशित हो चुके हैं। इनकी अप्रकाशित नाटकें भी है। साहित्य गतिविधियों और राजकीय निर्वहन के लिए नेगी जी को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

माता-पिता द्वारा संतान के लिए समर्पित जीवन :-

जीवन मूल्यों के प्रति लेखक सूरज सिंह नेगी ने बुजुर्गों की सक्रिय एवं सूक्ष्मतम चित्रण उनके उपन्यासों में किया है। आजकल की परिस्थिति को देखते हुए हम यह कह सकते हैं कि परिवार के सभी सदस्यों के मन और विचारों में समानता या एकरूपता होने की संभावना नहीं है। अपने संतान के लिए अपना सारा जीवन समर्पित करते हैं। सूरज सिंह नेगी द्वारा रचित उपन्यास 'रिश्तों की आंच' में वृद्ध माता–पिता के संपूर्ण जीवन अपने संतानों के हित के लिए समर्पण करने का प्रयास किया है। वृद्धावस्था में अपनी संतान के साथ रहते हुए भी उनकी स्नेह–भरी प्रेम पाने की इच्छा होती है। वर्तमान युवा–पीढ़ी अपने माता–पिता के लिए संवेदनशील नहीं है क्योंकि उनके साथ विचार–विमर्श करने के लिए समय नहीं है। प्रयुक्त उपन्यास में रमेश मुख्य पात्र है इसके संदर्भ में –'बहते हुए पानी, सन–सन करती हुई हवा, तड़पती हुई बिजली, लपकती हुई आग की लपटें और दिग्भ्रमित युवाओं की दिशा को भला कौन रोक सकता है? रमेश भी दिग्भ्रमित हो चुका था जिसे अपने स्वार्थ के आगे बूढ़ी और बीमार माँ के आंसू, भाई का प्यार दिखाई नहीं दे रहा था।'[8]

वह अपनी एम.बी.बी.एस की पढ़ाई पूरी कर एक व्यक्तिगत अस्पताल में नौकरी मिलते ही उस अस्पताल के मालिक की बेटी से ब्याह कर अपना परिवार को तड़पते हुए छोड़कर पत्नी के साथ रहने लगा। इस व्यवहार से माँ अपनी मानसिक तनाव को अंदर दबाकर बाहर हंसते–हंसते रमेश को आशीर्वाद करती है। वृद्धावस्था की शिथिलताओं को व्यक्त करते हुए सूरज सिंह नेगी जी कहते हैं – "अक्सर बुढ़ापे में इंसान दूसरों पर निर्भर हो जाया करता है। जो काम हम यौवनावस्था में स्वयं कर लेते हैं जैसे भी आना हो, जाना हो, क्या खाना, किससे मिलना, इन सब में स्वतंत्र होते हैं। वृद्धावस्था आते ही इन सभी कामों के लिए दूसरों पर निर्भर हो जाते हैं।"[9]

माता-पिता के प्रति उदासीनता के भाव का नष्ट :-

वृद्ध माता–पिता के प्रति संवेदनशील की भावना, त्याग परोपकार, जीवन मूल्य, जीवन आदर्श जैसे शाश्वत गुणों 'वसीयत' उपन्यास में लेखक ने रेखांकित करने का प्रयास किया है। वर्तमान युवा पीढ़ी के मन में अपने अभिभावकों के प्रति उदासीनता के भाव को नष्ट करने में पूर्ण रूप से सक्षम है। उत्तराखंड की कुमाऊंनी

भाषा प्रयोग कर विवेचित उपन्यास में तीन पीढ़ियों को समकक्ष तुलना करने का प्रयास किया है। उल्लेखित उपन्यास का नायक विश्वनाथ है। विश्वनाथ की पत्नी सुधा और उनके दो बेटे है। जब विश्वनाथ पुत्र से पिता बनता है तभी उसकी जीवन में बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया गया है। नायक विश्वनाथ के पिता और विश्वनाथ के पुत्र, दोनों के व्यवहार की तुलना प्रस्तुत उपन्यास में किया है। उपन्यास की कथावस्तु पत्र एवं डायरी के रूप में ही प्रस्तुत किया है। बूढ़े होने के बाद व्यक्ति बच्चा बन जाता है और बच्चों के साथ बाहर घूमने–फिरने लगते हैं। जब विश्वनाथ अपने पोते की जन्मदिन पर चलने की तैयार में निकलता है तब बहू और बेटा, दोनों उन्हें रोकते हुए कहते हैं कि घर पर ही रहें और घर की देखभाल करें। इस संदर्भ में राजकुमार कहता है, 'बाबूजी आप भी ना! अभी तक बचपना गया नहीं है। आप क्या करेंगे चलकर बच्चों का कार्यक्रम है, आप अधिक देर तक बैठ नहीं पाएंगे, यहीं घर पर ही आराम कीजिए।'[10]

विश्वनाथ उदासीन हो जाते हैं। अगले दिन अपने मित्रों को पोते की जन्मदिन के अवसर पर उन्हें खिलाते समय भावुक होकर उनसे कहते हैं,– 'कैसे न लूं दिल से। जिस बेटे करण के लिए मैंने जिंदगी भर न जाने कितनी धूप खाई, न बारिश देखी, न आंधी और न तूफान, हमेशा उसकी सलामती की दुआ मांगी। अरे बहू तो पराये घर की बेटी है उसे क्या दोष दूं, उसने तो मेरी तकलीफें नहीं देखी है पर मेरा करण जो बचपन से ही मेरी मजबूरी देखता आ रहा है आज मेरी भावना को न समझ सका। मैंने एक–एक पल कैसे बिताया, मेरी आत्मा ही जानती है। रात के ग्यारह बजे तक बेसब्री से इंतजार करता रहा। न कोई फोन आया, न ही वह लोग पार्टी कर घर वापस लौटे। भूख के मारे हाल बेहाल हो रहा था, सोचा था पार्टी में से लौटते समय मेरे लिए खाना पैक करके ले आयेंगे। मैंने किचन में देखा कुछ न था, तभी टिफिन पर नजर पड़ गई। अक्सर सुबह की बची हुई रोटियां टिफिन में रख दी जाती हैं और शाम को काम वाली बाई को दे दी जाती हैं मैंने टिफिन में रखी रोटी निकाली और खाकर भूख शांत कर डाली।'[11]

प्रस्तुत उपन्यास के शीर्षक को सिद्ध करते हुए विश्वनाथ के पिता अपनी डायरी में लिखते हैं – 'मेरे पुरखों द्वारा आजन्म परोपकार, परहित, त्याग समर्पण और सत्य का पालन करते हुए संस्कार, जीवन मूल्यों तथा सिद्धांतों के साथ जीवन–यापन किया गया जिनका अनुसरण मैंने अपने संपूर्ण जीवन काल में किया, यही मेरी असल कमाई है, जिसे मैं आज अपने विश्वा के नाम वसीयत के रूप में समर्पित करता हूँ।'[12]

माता-पिता का स्नेह अपने संतान के प्रति-अभाव :-

माता–पिता अपने औलादों को अपना प्रेम एवं वात्सल्य के वशीभूत के साथ समर्पण कर देते हैं। इसके प्रति सूरज सिंह नेगी अपने कर–कमलों से लिखा है 'नियति चक्र' उपन्यास। जिसमें पिता का स्नेह एवं प्रेम को अपना बेटा नहीं समझता। प्रस्तुत उपन्यास का नायक सेठ नितिन घोष अपनी सारी संपत्ति अपने पुत्र चित्रांश के नाम कर देते हैं। चित्रांश 'घोष एंटरप्राइजेज' का मालिक बन जाता है। घर का मालिक बन जाने पर उसमें अहम् का भाव आ जाती है। अपने कर्तव्य, नैतिकता और जिम्मेदारियों को भूलकर सबसे पहले अपने पिता के सभी विश्वास पात्रों को नौकरी से निकालता है जिससे नितिन घोष पूरी तरह टूट जाते हैं और अंत में अपने पिता को भी घर से चले जाने को कहता है। वह वर्तमान पीढ़ी के सोच में है जो अपने अभिभावकों को बोझ समझते हैं। नियति चक्र ऐसा ही घूमता है एक दिन चित्रांश शिखर से शून्य पर आ जाता है। तब चित्रांश के शब्दों में – 'मैंने बाबूजी के जीवन काल में उनका तिरस्कार किया, मैं स्वयं उनको अपना प्रतिद्वंद्वी मान बैठा, मुझे लगा

जैसे वह पुरातनवादी विचारधारा के साथ जी रहे हैं। यहां तक कि उनके घर से जाने के बाद भी मुझे कोई असर नहीं हुआ, लेकिन इस पुण्यात्मा को सम्मान न देने का नुकसान मुझे उठाना पड़ा। धीरे–धीरे कंपनी घाटी में जाने लगी, तैयार किए जा रहे माल की गुणवत्ता घटिया होने से बाजार में खरीद दार नहीं मिले। कार्य का बोझ बढ़ता जा रहा था। इसी दौरान जब आपसे मुलाकात हुई और बाबूजी के विषय में नजदीक से जानने का अवसर मिला, मैंने प्रण कर लिया था कि उनके बताए गए मार्ग पर चलूंगा आप द्वारा सौंपी गई बाबूजी की डायरी एक जीता जागता जीवन दर्शन है।'[13]

उपर्युक्त कथन के माध्यम से यह सिद्ध होता है कि हर परिवार के बुजुर्ग लोग घर का नींव होते हैं उनके मार्गदर्शन घर के युवा पीढ़ी के लिए आवश्यक है। विवेचित उपन्यास में चित्रांश की पश्चाताप से बदलती हुई मानसिक स्थिति को दर्शाते हुए लिखते हैं–'पिताजी की डायरी जब भी किसी संकट में या असमंजस में होता हूँ मेरा मार्गदर्शन करती है, लगता है जैसे मेरे बाबूजी आज भी मेरा मार्गदर्शन कर रहे हैं। जिन कर्मनिष्ठ और संस्था के वफादार कर्मचारियों को मैंने अहंकार वश संस्था से निकाल दिया था उनसे पुनः संपर्क साधा और उन सबको अपनी भूल के लिए क्षमा याचना करते हुए संस्था में लौट आने का आग्रह किया, आज बाबूजी के समय के कुछ वफादार कर्मचारी मार्गदर्शन को भूमिका में कार्य कर रहे हैं। सच यही है कि मैं अहंकार के वशीभूत इन नींव के पत्थरों की कद्र न कर सका और कंगारूओं को देख उन्हीं को सब कुछ मान बैठा था।'[14] अब चित्रांश समझ जाता है कि कर्म ही इंसान को महान बना सकता है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों में डायरी एवं पत्र के माध्यम से चिंताजनक एवं महत्वपूर्ण उद्देश्यों को चित्रित किया है। प्रस्तुत उपन्यास में पिता–पुत्र के बीच की संबंध, उनकी विचारात्मक भाव एवं मन–स्थिति आदि पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। सूरज सिंह नेगी अपने उपन्यासों के द्वारा वर्तमान पीढ़ी अपनी अभिभावकों की दशा में जब आते हैं वह अनुभव से अपना मानसिक परिवर्तन पर प्रकाश डालते हुए पाठकों को चिंताजनक बना दिया है। इससे समाज में परिवर्तन एवं अपना दायित्व को पूरा करने की ज्ञान चक्षु खुलने की प्रयास करेंगे। एक सिक्के के दो पहलू होते हैं वैसे ही वर्तमान पीढ़ी में पहले समाज की तरफ से अनैतिक, कठोर व्यवहार, व्यक्तिवादिता आदि का व्यवहार पाए और दूसरे तरफ संवेदनशील, भावुक, परहितकारी आदि गुण पाए हैं। मुझे आशा है कि आगे आनेवाली नई पीढ़ी यह उपन्यास पढ़े एवं बुजुर्गों के प्रति आदर, सम्मान, संवेदनशील आदि गुणों को जगाने का प्रयास करेंगे। अंततः इसके संदर्भ में घनश्याम चंद्र जोशी के छंद पंक्तियों प्रस्तुत करना चाहती हूँ :–

'परिवार व समाज की बुनियाद है–बुजुर्ग
गहरी सोच व अनुभव के भंडार–बुजुर्ग
सफलता की कुंज श्रद्धा के पात्र हैं–बुजुर्ग
हमारे समग्र विकास के चिंतन है–बुजुर्ग
भारतीय संस्कृति के संरक्षक हैं–बुजुर्ग
हमारे संरक्षक एवं मार्गदर्शन है–बुजुर्ग
सिर्फ वह सिर्फ सम्मान के भूखे हैं–बुजुर्ग
परिवार व समाज की शान है–बुजुर्ग।'[15]

संदर्भ सूची :-

1. श्री प्रकाश, अमर हिंदी शब्दकोश बृहत, पृ. सं–3153
2. राम प्रकाश सक्सेना, वर्धा हिंदी शब्दकोश, पृ. सं–3184
3. संपादक रिजवी, बृहत हिंदी शब्दकोश, पृ. सं–922
4. https://www.google.com/search?q=definition+given+by+any+author+ on+discussion&client =ms-android-vivo-terr1-rso2&sca_esv=3ee233fc35809b4c&biw=392&bih=740&sxsrf= AHTn8zqNCLgNo5CrS6XbJbcB798dOcpV5g%3A1741330369985&ei=wZfKZ8LlO_y M4-EPuNiCmA0&oq=definition+given+by+any+author+on+discussion&gs_lp=EhNtb2Jpb GUtZ3dzLXdpei1zZXJwIixkZWZpbml0aW9uIGdpdmVuIGJ5IGFueSBhdXRob3Igb24gZGl zYZVzc2lvbjIKEAAYsAMY1gQYRzIKEAAYsAMY1gQYRzIKEAAYsAMY1gQYRzIKEAA YsAMY1gQYRzIKEAAYsAMY1gQYRzIKEAAYsAMY1gQYRzIKEAAYsAMY1gQYRzIKE AAYsAMY1gQYR0isnAdQAFgAcAN4AZABAJgBAKABAKoBALgBA8gBAJgCA6ACOZg DAIgGAZAGCJIHATOgBwA&sclient=mobile-gws-wiz-serp
5. रामचंद्र शर्मा, मानक हिंदी शब्दकोश, पांचवा खण्ड, पृ.सं–107
6. डॉ. भावना कमाने (सं.), वृद्ध विमर्श : परंपरा और आधुनिकता, पृ.सं–97
7. https://www.google.com/search?q=definition+given+by+any+author+on+old+age&client= ms-android-vivo-terr1-rso2&sca_esv=3ee233fc35809b4c&biw=392&bih=740&sxsrf= AHTn8zotK8xUIExr52BOHk5ney4oeFy7yA%3A1741329688645&ei=GJXKZ9v3JsyH4- EPw4fhoAM&oq=definition+given+by+any+author+on+old+&gs_lp=EhNtb2JpbGUtZ3dz LXdpei1zZXJwIiZkZWZpbml0aW9uIGdpdmVuIGJ5IGFueSBhdXRob3Igb24gb2xkICoC CAAyBRAhGKABMgUQIRigATIFECEYoAEyBRAhGKABMgUQIRigAUjwE1CrDVirDXA CeACQAQCYAXagAXaqAQMwLjG4AQHIAQD4AQGYAgKgAhbCAgoQABiwAxjWBBh HmAMAiAYBkAYIkgcBMqAHtgQ&sclient=mobile-gws-wiz-serp
8. सूरज सिंह नेगी, रिश्तों का आंच, पृ.सं–50
9. सूरज सिंह नेगी, रिश्तों का आंच, पृ.सं–101
10. सूरज सिंह नेगी, वसीयत, पृ.सं–78
11. सूरज सिंह नेगी, वसीयत, पृ.सं–80
12. सूरज सिंह नेगी, वसीयत, पृ.सं–213
13. सूरज सिंह नेगी, नियति चक्र, पृ.सं–122
14. सूरज सिंह नेगी, नियति चक्र, पृ.सं–123
15. https://akashgyanvatika.com/%E0%A4%AC%E0%A5%81%E0%A4%9C%E0%A5%81% E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%97%E0%A5%8B%E0%A4%82-%E0%A4%95% E0%A5%80-%E0%A4%B8%E0%A5%87%E0%A4%B5%E0%A4%BE-%E0%A4%88% E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%B0-%E0%A4%AA/